

वेदान्त की वैश्विकता

प्रीति¹, डॉ० धनञ्जय मणि त्रिपाठी²

¹शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, (के.वि.वि), नई दिल्ली 110025, भारत।

²सह आचार्य, संस्कृत विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, (के.वि.वि), नई दिल्ली 110025, भारत।

सारांश

वेदान्त दर्शन भारतीय दर्शनों में ही नहीं अपितु समस्त विश्व दर्शनों में शिरोमणि है। शङ्कराचार्य द्वारा प्रतिपादित अद्वैतवाद नामक सिद्धान्त समस्त जगत् को ब्रह्म का विवर्त मात्र कहता है। तथा इसके अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र परमार्थ वस्तु है, अन्य सभी जड़ समूह अवस्तु है। अतः इन्हीं उत्कृष्ट अवधारणाओं से प्रभावित होकर देश एवं विदेश में वेदान्त का प्रचार प्रसार हुआ तथा अनेकों विदेशी विद्वानों ने वेदान्त दर्शन से प्रभावित होकर अपने ग्रन्थों को प्रकाशित किया। प्रस्तुत लेख में वेदान्त का स्वरूप, अवधारणाएँ एवं वेदान्त से प्रभावित पाश्चात्यों के ग्रन्थ एवं वेदान्त दर्शन के ग्रन्थों का अनुवाद एवं वेदान्त की वैश्विकता का उल्लेख किया जाएगा।

कूटशब्द:- वेदान्त, पाश्चात्य विद्वान्, अद्वैत, पॉल ड्यूसन, शोपेनहावर, इशरवुड, उपनिषद्

1. प्रस्तावना

इन्द्रियगम्य वैविध्य ने मनुष्य को निरन्तर इस प्रकार के चिन्तन के लिए विवश कर दिया है कि - उसके जीवन का लक्ष्य क्या है? वह शरीर मात्र ही है या शरीर से भिन्न कुछ और? इसी प्रकार के प्रश्नों को उत्तरित करने वाले विचारों की समग्रता को दर्शन नाम से अभिहित किया जाता है। सहस्र वर्षों की भारतीय मनीषा इन्हीं विचारों की गवेषणा में पुरस्सर रही है। चिन्तन के इसी अजस्र मन्थन का निर्मल नवनीत ही अद्वैतवाद है, जो आचार्य शङ्कर के दर्शन में तार्किक, सुसङ्गत एवं शास्त्रानुकूल है।

इसी शङ्कर दर्शन से समस्त पाश्चात्य जगत् प्रभावित हुआ। आचार्य शङ्कर के अनुसार मूलभूत चैतन्य तत्त्व एक ही है — निर्विकल्प, निर्विकार, निरुपाधिक व्यापक चेतन सत्ता का नाम ही ब्रह्म है। इस दृश्यमान जगत् को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है — चेतन तथा जड़।

अखण्डसच्चिदानन्दमवाङ्मनसगोचरम्। आत्मानमखिलाधारमाश्रयेऽभीष्टसिद्धये (त्रिपाठी, 1)।

अर्थात् पदार्थों की चेतनता का कारण उनमें व्याप्त, इन्द्रियों से अगोचर वह तत्त्व है, जिसे जीव अथवा आत्मा कहा गया है। चेतना स्वयं प्रकाश तत्त्व है।

2. अद्वैत वेदान्त का वैदिक एवं औपनिषदिक आधार

वेदों में सबसे पुरातन ऋग्वेद माना जाता है तथा ऋग्वेद में भी अद्वैत वेदान्त के बीज प्राप्त हैं 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' (ऋग्वेद - 1.164.46) यह वाक्य विविधता में एकता का मूल आधार है तथा यह अद्वैत वेदान्त के विवर्तवाद का ही सूक्ष्म रूप है। अद्वैत वेदान्त समस्त जगत् अथवा प्रपञ्च का निषेध कर अनिर्वचनीय रूप से चैतन्य तत्त्व की प्रतिष्ठा करता है। उसका उत्स नासदीय सूक्त में भी देखने को मिलता है। इसी प्रकार यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में भी अद्वैत के प्रतिपादक मन्त्र प्राप्त हैं। अद्वैतवाद की विचारधारा ही उपनिषदों में व्यापक रूप से है, तथा उपनिषदों का अपर नाम

वेदान्त ही है - 'वेदान्तो नामोपनिषत्प्रमाणं' (त्रिपाठी, 4)। चैतन्य की व्याख्या में उपनिषदों ने मण्डनात्मक एवं खण्डनात्मक दोनों प्रवृत्तियों का सहारा लिया है। खण्डनात्मक प्रवृत्ति का वाक्य 'नेति नेति' (बृहदारण्यकोपनिषद् - 2.3.6) तथा मण्डनात्मक प्रवृत्ति का महावाक्य 'तत्त्वमसि' (छन्दोग्य उपनिषद् 6.8.7)।

अद्वैत वेदान्त का मूल सिद्धान्त है — यदस्त्यादौ यदस्त्यन्ते यन्मध्ये भाति तत्स्वयम् । ब्रह्मवैकमिदं सत्यमिति वेदान्तडिण्डिमः (स्वामीजी, 23)। अर्थात् प्रत्यगभिन्न ब्रह्म की पारमार्थिक सत्ता, जो आदि में है अन्त में है एवं मध्य में , भी स्वयं भासित होती है, वही एकमात्र सत्य है, वह आत्मा अनुभूति स्वरूप होने से स्वयं सिद्ध है तथायन्नादौ यच्च नास्त्यन्ते तन्मध्ये भातमप्यसत् । अतो मिथ्या जगत्सर्वमिति वेदान्तडिण्डिमः (स्वामीजी, 24)। अर्थात् अनेकात्मक जगत् की मायिकता जो आदि और अन्त में नहीं है तथा मध्य में भासित होने पर भी असत् मिथ्या ही मानी गई है। जगत् जड़ होने से अनुभूति पर अवलम्बित है। ज्ञान दो प्रकार का है - वृत्त्यात्मक तथा स्वरूपात्मक। नामरूपात्मक जगत् अन्तःकरण का वृत्त्यात्मक ज्ञान है। 'न दृष्टुर्दृष्टेर्विपरिलोपो विद्यते' (बृहदारण्यकोपनिषद् 4.3.23)।

अर्थात् स्वरूपात्मक ज्ञान का लय नहीं होता, अतः वह किसी प्रमाण का विषय नहीं है, किन्तु समस्त प्रमाणों का आश्रय है। जीवब्रह्म की एकता लोकप्रसिद्ध है। जीवब्रह्म का भेद पारमार्थिक नहीं है-, प्रत्युत औपाधिक है।

3. पाश्चात्य विचारकों पर वेदान्त का प्रभाव

शोपेनहावर के अनुसार सङ्कल्प शक्ति अखिल सृष्टि का मूल है। शोपेनहावर निराशावादी दार्शनिक थे। कुछ आलोचकों ने उनके निराशावाद को भारतीय दर्शन का प्रभाव कहा है। उपनिषदों की सराहना के सन्दर्भ में शोपेनहावर कहते हैं- "In the whole world there is no study except that of the originals so beneficial and so elevating as that of the Oupnikhat) upanishad(it has been the solace of my life and it will solace of my death." (Barua, 23-29)

छान्दोग्य उपनिषद् के सङ्कल्प का प्रभाव शोपेनहावर पर पड़ा, जिसके कारण उन्होंने सङ्कल्पवाद की स्थापना की - तानि ह वा एतानि सङ्कल्पैकायनानि सङ्कल्पकात्मकानि सङ्कल्पेप्रतिष्ठितानि सङ्कल्पमुपास्वेति (छन्दोग्योपनिषद् - 7.4.2)।

प्रस्तुत मन्त्र में सङ्कल्प की महिमा बताई गई है। सङ्कल्प सर्वोच्च विद्या का ही भाग है। जहाँ नारद को सनत्कुमार समझाते हैं कि सङ्कल्प सभी प्रपञ्चों का आधार है। शोपेनहावर के निराशावाद को भारतीय दर्शन का प्रभाव कहने वालों में डेविड और रानाडे प्रमुख हैं। कठोपनिषद् के मन्त्र -अजीर्यताममृतानामुपेत्य जीर्यन् मर्त्यः क्यधःस्थः प्रजानन्। अभिध्यायन् वर्णरतिप्रमोदानतिदीर्घ जीविते को रमेत (कठोपनिषद् - 1.1.27)।

से शोपेनहावर के विचार की तुलना करते हुए रनाडे लिखते हैं कि " -This is almost in the spirit of Schopenhauer who said that the last thing for man here below is not to have been born at all and the second last to have died young". (294)

किन्तु रनाडे का मत उचित नहीं क्योंकि उपनिषदों द्वारा प्रतिपादित दर्शन को कदापि निराशावाद का जनक नहीं कहा जा सकता। इस लोक में जीव के आत्मतत्त्व वेत्ता होने का वर्णन इस बात का प्रमाण है कि उपनिषद् दर्शन निराशावादी दर्शन नहीं है। रनाडे ने जो मन्त्र उद्धृत किया है उसमें नचिकेता द्वारा इस सांसारिक सौन्दर्य तथा प्रेमजन्य सुख के जीवन को ब्रह्मानन्द का अनुभव करने वाले अमर जनों के जीवन की अपेक्षा हेय कहा गया है। ब्रह्मानन्द एवं सांसारिक सुख

का भेद स्वाभाविक ही है। अतः रनाडे का निराशावादी दर्शन से उपनिषद् दर्शन का साम्यमूलक तुलना करना उचित नहीं है।

वेदान्त दर्शन का सार्वभौमिक स्वरूप अत्यन्त व्यापक है, दर्शन एवं वेदान्त का व्याप्य व्यापक सम्बन्ध है। यदि दर्शन व्याप्य है तो वेदान्त व्यापक है। प्राच्य से प्रतीच्य तक सभी विद्वान् वेदान्त दर्शन से प्रभावित हैं। इसी सन्दर्भ में स्वामी ब्रह्मानन्द कहते हैं कि – “वेदान्तदर्शनं दर्शनेषु सर्वेषु दर्शनीयतमं दर्शनम्”। अर्थात् वेदान्त दर्शन सभी विश्व दर्शनों में प्रशस्ततम दर्शन है। सभी विद्वानों पर यत्रतत्र वेदान्त दर्शन का प्रभाव पूर्णतः परिलक्षित होता है। अनेकशः विद्वान् तो इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने वेदान्त दर्शन के ग्रन्थों का अनुवाद, टीका, भाष्य, तथा समस्त वेदान्त दर्शन से सम्बन्धित ग्रन्थों की रचना की। जर्मन के विद्वान् जॉर्ज थिबौत ने भी ब्रह्मसूत्र शाङ्कर भाष्य का आङ्ग्ल भाषा में अनुवाद कर आङ्ग्ल भाषा भाषियों पर उपकार किया है। पाश्चात्य दार्शनिकों की चिन्तनधारा अनेक तथ्य एवं सिद्धान्त अद्वैत वेदान्त की विचारधारा के समान है। वाचस्पति मिश्र ने कहा है “न हि कश्चित् संदिग्धो नाऽहमस्मि”। इसी प्रकार फ्रांसीसी दार्शनिक डेकार्ट ने भी “cogito, ergo sum” (मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ यह कहकर अ (हं अनुभव की सिद्धि की है। (शर्मा, राममूर्ति, X)। इसी प्रकार अद्वैत वेदान्त की माया एवं लाइब्निज के “मैटीरिया प्राइमा” में यह समानता है कि दोनों ही आत्मदर्शन में बाधक हैं। वेदान्त में अध्यारोप एवं अविद्या ब्रह्मज्ञान की सहायिका है – “अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा ततोऽमृतमश्नुते” (ईशावास्योपनिषद् 11)। तथा हेगल भी लिखते हैं कि – Otherness or error as cancelled is itself a necessary moment of truth. प्लेटो अनेक विद्वानों के ऊपर एक सर्वोच्च विज्ञान को स्वीकार करते थे। प्लेटो द्वारा स्वीकृत यह सर्वोच्च विज्ञान शिवरूप था। यह नितान्त स्पष्ट है कि यह शिवरूप सर्वोच्च विज्ञान उपनिषदों के “शिवमद्वैतम्” ब्रह्म के ही समान है।

उपनिषदों का रहस्य जर्मन जिज्ञासुओं के लिए पहले 50 उपनिषदों के लैटिन अनुवाद के माध्यम से ही उपलब्ध था, जिसे आँकातील ड्यूपर्ने ने सन् 1801-02 में तैयार किया। ड्यूपर्ने फ्रांसीसी विद्वान् थे। उनका यह अनुवाद एक फारसी अनुवाद का रूपान्तर मात्र था। उक्त फारसी अनुवाद उपनिषदों के भक्त मुगल राजकुमार दारा शिकोह ने सन् 1656 में किया था। आर्थर शोपेनहावर, जिसका नाम उत्कट उपनिषद् भक्त के रूप में प्रख्यात है, शोपेनहावर अपने समय के प्रौढ़ दार्शनिक थे। वह संस्कृत नहीं पढ़ सकते थे, तथापि अनुवाद के माध्यम से उनमें उपनिषद् दर्शन के प्रति अपार रुचि उपजी। शोपेनहावर के अतिरिक्त उपनिषदों पर काम करने वाले कई विद्वानों ने अनेक उपनिषदों के अनुवाद किए। किन्तु जर्मनी में उपनिषदों का जो सबसे अधिक अधिकारी विद्वान् हुआ है, उसका नाम है पॉल ड्यूसन, जिन्हें भारतीय विद्वानों ने अत्यन्त प्रेम के कारण ‘देवसेन’ नाम दिया है। ड्यूसन ने 60 उपनिषदों का अनुवाद किया, आज इसका चतुर्थ संस्करण उपलब्ध है। उपनिषद् संसार का प्राचीनतम दर्शन है, इसलिए आज भी भारतीय दर्शन का अनुशीलन विश्व भर में किया जाता है।

वेदान्त दर्शन से प्रभावित अनेकों ग्रन्थ देश विदेश में रचे गए। जिनका उल्लेख संक्षिप्त रूप में किया जा रहा है।- दर्शन से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने अपने गुरु प्रभवानन्द के साथ मिलकर अद्वैत वेदान्त परम्परा के प्रमुख ग्रन्थों पर कई अनुवाद कार्य किए। 1963 में *An approach to Vedanta* तथा 1969 में *Essentials of Vedanta* ये दोनों ग्रन्थ इशरवुड की मौलिक रचनाएँ हैं। इशरवुड ने भगवद्गीता का अनुवाद *The Song of God* के नाम से प्रकाशित किया। इसके अतिरिक्त विवेकचूड़ामणि को *Shankara's Crest Jewel of Discrimination* के नाम से अनूदित किया। इशरवुड ने वेदान्त सम्बन्धित अनेक पत्रिकाओं का सङ्ग्रह कर दो निबन्धों का सम्पादन किया। जो कि *Vedanta for the Western World*, 1945 एवं *Vedanta for the Modern Man*, 1951 के नाम से विख्यात हैं। इसके

अतिरिक्त भी वेदान्त से प्रभावित होकर इशरवुड ने अनेकों कार्य किए।

जर्मन विद्वान् पॉल ड्यूसन रॉयल एशियाटिक सोसाइटी बम्बई में भाषण देते हुए कहते हैं कि – अविकृत वेदान्त दर्शन पवित्र नीतियों की सुदृढ़ नींव है और जीवन व मृत्यु के दुख समूह के लिए परम सांत्वना का स्थल है। हे भारतवासियों, इसे कभी न छोड़ें (बरनवाल, 105)। इसी प्रकार वेदान्त का बखान करते हुए ड्यूसन कहते हैं – “On the tree of wisdom there is no fairer flower than the Upanishads and no finer fruit than the Vedanta philosophy” (Duessen, prefatory note p. vii).

ड्यूसन ने 1906 में ब्रह्मसूत्र का जर्मन अनुवाद *Die Sutras des Vedanta* के नाम से प्रकाशित किया।

ड्यूसन के *Die Philosophie der Upanishads* का अंग्रेजी अनुवाद A. S. Geden द्वारा हुआ। *Schezig Upanishads des Veda* का अंग्रेजी अनुवाद *Sixty Upanishads of the Veda* नाम से हुआ। *Das System des Vedanta* नामक ड्यूसन की रचना का अनुवाद सर चार्ल्स जॉनसन द्वारा किया गया। शोपेनहावर का ग्रन्थ *The World as Will and Representation* भी वेदान्त दर्शन से प्रभावित है। जर्मन विद्वान् फ्रेडरिक मेजर वेदान्त दर्शन से प्रभावित होकर *Brahma or the Religion of the Indians as Brahmanism* नामक ग्रन्थ की रचना की। पाश्चात्य विद्वान् गफ शङ्कर की प्रशंसा में कहते हैं कि – उपनिषद् दर्शन के सर्वांगी महान व्याख्याता शङ्कर हैं। स्वयं शङ्कर की शिक्षा उपनिषद् दर्शन की ही स्वाभाविक एवं उचित व्याख्या है (Gough, preface p. VIII)।

मेकेन्जी के अनुसार सृष्टि विज्ञान के क्रमिक सिद्धान्त का प्राचीन एवं महत्वपूर्ण प्रयत्न उपनिषदों में प्रकट किया गया है। मेकेन्जी ने उपनिषदों को वेदान्त सिद्धान्त की प्राचीनतम पृष्ठभूमि के रूप में ही स्वीकार किया है। जर्मन विद्वान् पॉल हैकर ने 1950 ईमें . *डाय शिलट शङ्कर* तथा 1953 ईमें . *विवर्त* नामक वेदान्त दर्शन से सम्बन्धित पुस्तकें प्रकाशित कीं। (बरनवाल, 191)

आँकातील ड्यूपर्रा के लैटिन अनुवाद ‘आउपनेखत्’ (उपनिषद्) से पाश्चात्य जगत् में मानो बौद्धिक क्रान्ति हो उठी। जिसने विभिन्न विचारकों को गहनता से प्रभावित किया। आयरलैण्ड देशीय आङ्गल भाषा के प्रख्यात विद्वान् डब्ल्यू. बी. ईट्स के काव्य वेदान्त दर्शन से विशेष रूप से प्रभावित दृष्टिगोचर होता है (Davenport, 55-62)। डब्ल्यू. बी. ईट्स ने *The ten principal Upanishad* ग्रन्थ भी प्रकाशित किया। इसी सन्दर्भ में पश्चिमी दार्शनिक स्पिनोज़ा का भी नाम आता है, जो वेदान्त दर्शन से प्रभावित हुए। प्राच्यविद्या के समीक्षक एडवर्ड सईद आँकातील ड्यूपर्रा के अनुवाद ‘आउपनेखत्’ तथा वेदान्त के प्रचार प्रसार के विषय में लिखते हुए कहते हैं कि – He has dug a channel between the hemishpheres of human genius, correcting and expanding the old humanism of the mediterranean basin. (Said, 77)

रूसी विद्वान् लियो टॉल्स्टॉय वेद वेदान्त (उपनिषद्) को अत्यधिक श्रेष्ठतम रचनाओं की श्रेणी में मानते थे। उन्होंने उपनिषदों को देशातीत तथा कालातीत माना है। उपनिषद् तथा वेदान्त के अध्ययनोपरांत उनमें वर्णित परमार्थ सत्य का प्रचार प्रसार किया। लियो टॉल्स्टॉय ने शङ्कराचार्य के अन्य दार्शनिक रचनाओं का भी अध्ययन किया तथा उनकी इच्छा थी कि रूसी प्रजा भी वेदान्त दर्शन का ज्ञान प्राप्त कर लाभान्वित हो (बरनवाल, 213)। इसी प्रकार रोमानिया के विद्वान् रादू बेर्चेआ ने प्राचीन उपनिषदों का अनुवाद आलोचना सम्बन्धी टिप्पणियों के साथ प्रकाशित कराया (बरनवाल, 210)।

अमेरिकी विद्वान् डेविड फ़ाली भारतीय अध्यात्म से प्रेरित होकर संस्कृत भाषा में कुशलता प्राप्त कर आदि शङ्कराचार्य के ग्रन्थों का अध्ययन किया तथा अद्वैत सिद्धान्त को समझा। उनके द्वारा वेदों उपनिषदों आदि विषयों पर केन्द्रित कई शोध लेख एवं ग्रन्थों की रचना भी की गई। जिसका प्रकाशन अमेरिका एवं भारत में भी हुआ है (बरनवाल, 185)। इंग्लैण्ड के अंग्रेजी साहित्यकार टी. एस. इलियट इन्होंने हार्वर्ड विश्वविद्यालय से भारतीय दर्शन का अध्ययन किया। इलियट गीता की सूक्ति 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचना' (श्रीमद्भगवद्गीता 2.47) को आत्मसात कर इसी विचारधारा के मार्ग का अनुसरण करने का संदेश देते हैं (बरनवाल, 182)। इलियट पश्चिमी भौतिकवादी दर्शन के कटु आलोचक तथा उपनिषद् एवं वेदान्त के अद्वितीय प्रशंसक थे। इटली के जिआर्जिओ रेनार्तो फ्रांजी ने भी भक्ति और वेदान्त के कई महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की है। आयरलैण्ड के विद्वान् जॉर्ज रसेल भारतीय मनीषियों एवं उनके चिन्तन की प्रशंसा में लिखते हैं कि – “जीवनी शक्ति एवं ज्ञान की उच्चता की दृष्टि से गेटे, वर्ड्सवर्थ, एमर्सन और थोरो आधुनिकों में ये चार श्रेष्ठ चिन्तक हैं किन्तु उन्होंने जो कुछ कहा है वह सभी बातें एवं उससे भी उत्कृष्ट पूर्वी ग्रन्थों में मिलती है। उपनिषदों में प्रत्येक विषय पर ज्ञान की ऐसी सम्यक् पूर्णता है मानो इसके रचयिता ने अपने पीछे के सहस्र जीवनों को अत्यन्त समीप से देखा हो” (बरनवाल, 176)।

इसी प्रकार कालों देलाकासा इटली मिलानो विश्वविद्यालय के अध्यापक ने भी वेदान्त की विचारधारा से प्रभावित होकर उपनिषदों का अनुवाद किया। फ़्रांस के विद्वान् ओलिवर लोकोम्बे प्रथम पाश्चात्य दार्शनिक जिन्होंने विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के रामानुज श्री भाष्य का फ्रेंच भाषा में अनुवाद किया था। अति विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त योग की तुलनात्मक भूमिका भी लिखी थी (बरनवाल, 166)। जर्मनी देशीय एफ. ओटो श्रेडर संस्कृत के विद्वान् थे, यह भी वेदान्त दर्शन के विशिष्टाद्वैत दर्शन से प्रभावित थे। ऐसे ही श्रीमती एनी बेसेन्ट हैं जिन्होंने वेदान्त एवं उपनिषदों से सम्बन्धित ग्रन्थों की रचना की। इसी संदर्भ में जर्मन विद्वान् अलबर्ट स्वेट्जर तथा अलरिच श्चेन्डर का भी नाम आता है जो वेदान्त के परमार्थ सत्य की विचारधाराओं से प्रभावित हुए। इसी प्रकार मैक्समूलर, ह्यूम, कीथ वॉर्ड एवं श्रोडिंगर आदि विद्वान् भी वेदान्त दर्शन से प्रभावित हैं।

निष्कर्षतः -

इस प्रकार वेदान्त की वैश्विकता अत्यन्त व्यापक है। वेदान्त दर्शन जीवब्रह्मैक्य के सिद्धान्त पर बल देता है। वेदान्त के ही सिद्धान्तों को पाश्चात्य जगत् ने अपनाकर अपने अनुसार प्रस्तुत किया। वेदान्त न केवल भारत अपितु सम्पूर्ण विश्व में प्रख्यात है। शोपेनहावर ने उपनिषद् दर्शन को ही अपने जीवन तथा मृत्यु की सात्वना कहा, वहीं पॉल ड्यूसन उपनिषदों को ज्ञान के वृक्ष का पुष्प तथा वेदान्त को उसका फल कहते हुए वर्णित करते हैं। विश्वभर के विद्वानों द्वारा वेदान्त एवं उपनिषदों पर अनेकों भाषाओं में अनुवाद (लैटिन, जर्मन, अङ्ग्रेजी तथा फ्रेंच आदि) तथा व्याख्याएँ प्रस्तुत की गईं। वेदान्त केवल क्षेत्रीय दर्शन नहीं अपितु वैश्विक दर्शन है, जिसके सिद्धान्त कालातीत एवं देशातीत हैं। वेदान्त का मोक्ष साक्षात् ज्ञान स्वरूप है – “सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्म” (तैत्तिरीयोपनिषद् 2.1.1)। सभी दर्शनों में यही मोक्ष का अन्तिम स्वरूप है। अतः वेदान्त सिद्धान्तों का पाश्चात्य जगत् एवं विश्व दर्शन पर प्रभाव परिलक्षित होता है। औपनिषद् एवं शाङ्कर वेदान्त एक वैश्विक दर्शन है, यह बात उपर्युक्त वर्णनों से सिद्ध होती है एवं इनके सिद्धान्त सार्वजनीन हैं।

संदर्भग्रन्थ सूची-

बरनवाल, जगदीश प्रसाद 'कुन्द'. (2017). *विदेशी विद्वानों का संस्कृत प्रेम*. दिल्ली: मेधा बुक्स।

भार्गव, आचार्य दयानन्द. (2024). *उपनिषद्*. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास इंटरनेशनल।



विश्व के प्रमुख दार्शनिक. दिल्ली: वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग।

शर्मा, राममूर्ति. (2008). *भारतीय दर्शन की चिंतनधारा*. दिल्ली: चौखम्बा ओरियन्टलिया।

शर्मा, उमाशङ्कर 'ऋषि'. (2023). *सर्वदर्शनसङ्ग्रहः*. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।

स्वामीजी, श्री सच्चिदानन्देन्द्र सरस्वती. (2001). *वेदान्तडिण्डिमः*. कर्नाटक: अध्यात्म प्रकाश।

सिंह, शिल्पा, सरकार, राजेश. (2022). *विदेशी विद्वानों का वेद एवं संस्कृतविद्या विषयक अवदान*. दिल्ली: चौखम्बा ओरियन्टलिया।

सरस्वती, स्वामी सत्यानंद. (2021). *ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम्*. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन।

त्रिपाठी, रमाशङ्कर. (2005). *वेदान्तसार*. दिल्ली: चौखम्बा ओरियन्टलिया।

Barua, Arati. (2008). *Schopenhauer's Philosophy of Will and Sankara's Advaita Vedanta: A Comparative Study*. Proceedings of the XXII World Congress of Philosophy. Vol. 8, 23-29.

Davenport, A. (1952). *W.B. Yeats and the Upanishads*. The Review of English studies, Vol. 3, no. 9, 55-62.

Duessen, Paul, Wood, James Haughton, tr; Runkle, Catharine Bird, (1906). *outline of the Vedanta system of philosophy*. New York: The Grafton press.

Gough, Archibald Edward. (1903). *Philosophy of the Upanishads and ancient indian metaphysics*. London: kegan paul, trench, trubner & co. L" paternoster house, charing cross road.

Isherwood, Christopher. (1977). *Christopher and his kind*. New York: Avon Book.

Ranade, R.D. (1926). *Constructive survey of Upanishadic philosophy*. Poona: Oriental Book.

Said, Edward W. (1979). *Orientalism*. New York: Vintage Books.